**क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।**
**क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम।।३।।**

**क्षेत्रम्**=क्षेत्र को जानने वाला; **च**=भी; **अपि**=निस्सन्देह; **माम्**=मुझ को; **विद्धि**=जान; **सर्व**=सब; **क्षेत्रेषु**=देहों में; **भारत**=हे भरतवंशी अर्जुन; **क्षेत्र**=देह; **क्षेत्रज्ञयोः**=देही को; **ज्ञानम् यत्**=जो तत्त्व से जानना है; **तत्**=वही; **ज्ञानम्**=यथार्थ ज्ञान है; **मतम्**=(ऐसा) मत है; **मम**=मेरा।

**अनुवाद**

हे भरतवंशी अर्जुन! मैं भी सब देहों (क्षेत्रों) को जानने वाला (क्षेत्रज्ञ) हूँ। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ को जो इस प्रकार जानना है वही ज्ञान है—ऐसा मेरा मत है।।३।।

**तात्पर्य**

इस देह (क्षेत्र) और देही (क्षेत्रज्ञ) एवं आत्मा और परमात्मा के तत्त्व-निरूपण में परमात्मा, जीवात्मा और जड़ प्रकृति—इन तीन विषयों का विवेचन किया जायगा। प्रत्येक क्षेत्र में दो आत्मा हैं—परमात्मा और जीवात्मा। परमात्मा श्रीकृष्ण का अंशरूप है। इसी कारण श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं भी क्षेत्रज्ञ (देह का ज्ञाता) हूँ। परन्तु मैं जीवात्मा नहीं हूँ; मैं परम क्षेत्रज्ञ हूँ, इसलिए परमात्मा रूप से सब देहों में हूँ।'

जो भगवद्गीता के अनुसार क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के तत्त्व का सूक्ष्म रूप से अध्ययन करे, उसे पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि हो सकती है।

श्रीभगवान् कहते हैं, 'मैं प्रत्येक जीव-देह में क्षेत्र को जानने वाला क्षेत्रज्ञ हूँ।' जीवात्मा अपने देह का ज्ञाता तो हो सकता है, पर अन्य देहों का ज्ञान उसे नहीं है। अन्तर्यामी परमात्मा रूप से सब देहों में विद्यमान श्रीभगवान् ही उन सबके सम्बन्ध में जानते हैं। जीवन की सभी योनियों की सारी देहों को वे जानते हैं। एक नागरिक को केवल अपनी ही भूमि की पूर्ण जानकारी हो सकती है; किन्तु राजा तो अपने महल के सम्बन्ध में ही नहीं, बल्कि सारे नागरिकों की निजी सम्पत्ति के सम्बन्ध में भी जानता है। अतः जीवात्मा किसी एक देह का स्वामी हो सकता है, जबकि परमेश्वर सब देहों के स्वामी हैं। राज्य पर मूल स्वत्व राजा का होता है, नागरिकों का नहीं। ऐसे ही, श्रीभगवान् सब देहों के परम ईश्वर हैं।

देह इन्द्रियों से बनी है। परमेश्वर को हृषीकेश कहा जाता है, जिसका अर्थ हुआ कि वे इन्द्रियों के ईश्वर हैं। वे इन्द्रियों के मूल ईश्वर हैं, उसी प्रकार जैसे राज्य की सम्पूर्ण क्रियाओं का मूल नियामक राजा है और प्रजा उपनियन्ता मात्र है। श्रीभगवान् कहते हैं, 'मैं भी क्षेत्रज्ञ हूँ।' इसका अर्थ है कि वे परम-क्षेत्रज्ञ हैं, जबकि जीवात्मा तो केवलमात्र अपने देह को जानता है। वैदिक साहित्य में उल्लेख है:

**क्षेत्राणि हि शरीराणि बीजं चापि शुभाशुभे।**
**तानि वेत्ति स योगात्मा ततः क्षेत्रज्ञ उच्यते।।**

यह देह क्षेत्र है, क्षेत्रज्ञ के साथ इसमें परमात्मा भी निवास करते हैं; इसलिए वे